International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2017; Page No. 35-36

शौर्यचक्र से सम्मानित श्री रजनीश कुमार जी की याद में

ब्रह्म दत्त 'मगोत्रा'
बडाली, विजयपुर, साम्बा, जम्मू व कश्मीर, भारत।

प्रस्तावना

भारत माँ की कोख से कईं ऐसे सपूतों ने जन्म लिया है, जिन्होनें सरहद की रक्षा के खातिर अपने प्राण तक न्योछावर कर दिए। भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव इसी माँ के जाए थे, वह ऐसे क्रान्तिकारी थे जिन्होनें अंग्रेजी शासन को तहस–नहस करके भारत को गुलामी से आजाद करवाया था। भारत को अंग्रेजी शासन से तो मुक्ति मिल गई लेकिन यह विशाल देश दो टुकड़ों में विभाजित हो गया। भारत और पाकिस्तान दोनों देशों के आपसी संबन्धों में मतभेद के चलते सरहद पर तनोतनी और दहशत का माहौल गरमाया रहता है। सरहद की स्थिति नाजुक होने के कारण आए दिन दुश्मनों से मुठभेड़ का होना संभव है। भारत माँ के सपूत तन, मन और धन से सरहद की चौकसी करते आए हैं, इसमें चाहे उनको अपनी जान तक ही क्यों न देनी पड़ जाए वह मुस्कराते हुए जान को गले से लगा लेते हैं। भारत के अन्य राज्यों के मुकाबले जम्मू व कश्मीर राज्य की सीमा पर सैनिकों को कठिन चुनौतियों और परेशानियों से झूझना पड़ता है। फर्ज के प्रति इनकी इमानदारी और देश भक्ति के भाव को देखकर सभी भारतवासियों का सिर इनके सम्मान में झुक जाता है। यह सीमा पर सतर्कता से अपने फर्ज को अंजाम दे रहें हैं तभी तो हमारी जिंदगी महफूज है। भारतीय सेना ने पूरी दुनियां में अपना लोहा मनवाया है। यूं तो हर सिपाही देश के प्रति जिम्मेदार है लेकिन कुछ ऐसी खास छवियाँ हमारे जैह्न में उतर जाती है जिनको बार–बार नमन करने को दिल चाहता है। फिर चाहे वह जांबाज सॅन 1965 में भारत पाक युद्व के दौरान शहीद हुए हों यां 1971 में यां फिर कारगिल युद्व की ही बात क्यों न हो। भारतीय सैनिकों ने कभी भी मैदान में पीठ नहीं दिखाई बल्कि अपनी शुरवीरता का ही प्रमाण दिया है।

ऐसे ही शूरवीरों में श्री रजनीश कुमार जी का शौर्य भी देखते ही बनता था। वह बचपन में शरारती, नटखट और फुर्तीले स्वभाव के थे। कार्य कोई भी हो जा जैसा भी हो वह निस्वार्थ भाव से उसे पूरा करने में जुट जाते थे। इनका जन्म चार अगस्त 1976 में श्री रमेश चंद्र जी और श्रीमति सुदेश कुमारी जी के घर गाँव सारबा में हुआ। इनके छोटे भाई का नाम आशुतोश शर्मा है और बहन का नाम श्रीमति नीतु शर्मा है। अपनी शुरूआती पढ़ाई इन्होनें अपने गांव के राजकीय प्राथमिक विद्यालय से प्राप्त की। घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण रजनीश जी को पांचवी कक्षा की पढ़ाई के बाद अपने नैनीहाल तरोर में पढ़ाई के लिए भेजा गया। नैनीहाल में इनका लालन–पालन बड़े चाव और लाड़ प्यार से होने लगा। रजनीश जी वहाँ सभी की आंखों के तारे थे। देखते ही देखते दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद रणवीर हायर सैकेंडरी स्कूल में ग्यारहवीं में प्रवेश कर लिया। ग्यारहवी कक्षा के दौरान ही उनको देश की सेवा करने का मौका मिला फलस्वरूप 21 अप्रैल 1994 में पहली –जैकराइफल में श्री रजनीश कुमार जी भर्ती हो गए और जिंदगी के सही मकसद की और कार्यरत हो गए। मानों की भगवान ने ही रजनीश जी को इस दिशा में जाने का इशारा किया हो। नौ महीनें लगातार ट्रैनिंग करने के बाद इनको युनिट में भेजा गया। इनकी पहली पोस्टिंग तरनतारन (पंजाब) में हुई जहां इन्होने लगभग एक साल तक देश के प्रति सेवायें प्रधान कीं। रजनीश जी की दूसरी पोस्टींग असम राज्य में हुई वहां एक साल तक रहने के बाद इनकी कम्पनी को जिला पुंछ में नियुक्त किया गया। देश के प्रति समपर्ण भाव और लगन के चलते रजनीश जी ने 31 आर आर कमांडो हैडक्वाटर उधमपुर में अपना नाम दर्ज कर दिया। शुरूआती परीक्षण के बाद श्री रजनीश कुमार जी को इनफैंटरी कमांडो विंग इनसिटियुट बैलगाम में घातक कोर्स करने के लिए भेजा गया कड़े परीक्षणो से दो चार होते हुए कमांडो घातक कोर्स में भी यह सफल हो गए। इनका यह कोर्स 20 जनवरी 2001 से 26 फरवरी 2001 तक चला। इस मुश्किल भरे और खतरनाक तजुरबे के बाद बतौर कमांडो रजनीश जी पुंछ में चार साल लगातार रहते, कईं मुठभेड़ों को अंजाम दिया और आंतकवादियों के नापाक इरादों को चकनाचूर कर दिया। जब भी सीमा पर आंतक के बादल मंडराने लगते तो वह अपने आप को काबू में नही रख पाते थे। इनके कारनामों की एक सूची जब 31 आर.आर के सी. ओ जे एस मनराल जी ने अंडेमान निकोवार, जहां रजनीश जी नियुक्त थे वहां भेजी। दरबार में जब इनकी बहादुरी के किस्से पढ़े गए तो सब सिपाही मंत्रमुग्द हो गए और रजनीश जी का सीना गर्व से फूल गया। 11 सितम्बर 2001 में जब आंतकवादीयों ने ससंद पर हमला किया उस दौरान श्री रजनीश जी जिला साम्बा में घगवाल के एक गांव टपेआल में नियुक्त थे। संसद पर हमले के बाद पूरे भारतवर्श में ऑपरेशन प्राक्रम चलाया गया जिसके तहत भारत के कोने–कोने से आंतकवादीयों को तलाशने का अभियान शुरू हुआ। रजनीश कुमार जी को उनके शौर्य और बहादुरी के कारण ही संवेदनशील जगह मेंडर तहसील के बालाकोट सेक्टर में नियुक्त कर दिया गया। रजनीश जी जिला पुंछ के चप्पे–चप्पे से वाकिफ थे। उस समय श्री हरजीत सिंह जी सी.ओ. की पोस्ट पे थे उन्होने श्री रजनीश कुमार जी से सलाह मशबरा करके तलाशी अभियान करने का फैसला किया, उसी दौरान आंतकवादीयों के गुसपैठ की विश्वसनीय खबर मिलते ही 6 सिपाहियों के साथ लैस नायक रजनीश जी अंधेरी रात में आंतकवादीयों से लोहा लेने निकल पड़े। दिसम्बर में जमा देने वाली ठंड के चलते यह जंगजू वीर खोफनाक जंगल में आतंकवादियों को तलाश रहे थे। अचानक इनको कदमों की आहट सी सुनाई दी कुछ देर तक इनको लगा की कोई जंगली जानवर गुजर रहा है पर जब इनकी नजर हथियारों से लदे हुए आंतकियों पर पड़ी तो यह चौकस हो गए। श्री रजनीश जी ने प्राक्रम दिखाते हुए दो आंतकियों को मौके पर ही मार गिराया। इस जोरदार हमले को देखकर बाकी के आंतकी कुछ देर तो वहां टिके,

लेकिन बाद में अंधेरे की आड़ लेकर वहां से तितर–भितर हो गए। आंतकियों को बार–बार ललकराने पर भी वह बाहर नहीं निकले। रजनीश जी अपने साथियों के साथ सारी रात वहां पे डटे रहे। 26 दिसम्बर 2002 की सुबह 6:45 मिनट पर 3 आंतकियों ने इन पर जोरदार हमला कर दिया और रजनीश जी बुरी तरह से जख्मी हो गए फिर भी गोलियों की परवाह किए बिना रेंगते हुए इन्होने एक और आंतकी को मार गिराया। अब इनका शरीर गोलियों से छलनी हो चुका था लेकिन आखरी सांस तक इन्होने हिम्मत नही छोड़ी और आंखे मूदने से पहले एक और आंतकी को मौत के घाट उतार दिया रजनीश जी के शौर्य और प्राक्रम को देखकर बाकी साथियों का खून खुल उठा और उन्होने बचे आंतकीयों को भी ढेर कर दिया। इस तरह इस जांबाज सिपाही ने शहादत पाकर अपने और परिवार के नाम को अमर कर दिया। रजनीश जी के इस शौर्य के कारण ही मरणोपरांत शौर्य चक्र से सम्मानित करने का निर्णय लिया गया और 15 अगस्त 2003 को भारत के राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी ने इनके पिता श्री रमेश चंद्र जी को यह सम्मान भेंट किया। ऐसे गौरवगान देशभक्त की याद में इनकें गाँव सारबा में समाधी स्थल का निर्माण किया गया है। वहीं पर इनका विधिवत संस्कार भी किया गया है। बड़े उत्साह और प्रेरणापूर्वक भाव से हर वर्श 25 दिसम्बर को श्रद्वाजली समारोह का आयोजन किया जाता है। उसके दूसरे दिन 26 दिसम्बर को भंडारे का प्रबंध भी किया जाता है। ऐसा लगता है कि वह आज भी अपनी प्रतिमा के रूप में नौजवानों को प्रेरित और उत्साहिज करने की जिम्मेदारी अपने कंधो पर लिए हुए हैं। माता–पिता ने इनके भतीजे का नाम शौर्यवीर रजनीश रखकर अपने दिलों में उसकों जिंदा रखा है। इसके इलावा रजनीश जी को लिखने का भी शौक था। वह प्रतिदिन डायरी लिखा करते थे। उनकी डायरी से मिली कुछ कविताओं के अंश मैं यहां दर्शानना चाहता हूँ। उनका मानना था की जब तक आप खुद मेहनत नही करेंगे तब तक आपको कोई भी सहारा नहीं देगा उन्होने लिखा है :–

'' किसको अपनाएं किसको गैर कहें
दिल से यह फैसला नहीं होता
मुश्किलें हर कदम पें हैं
दरपेश करना चाहें तो क्या नहीं होता
अपनी हिम्मत का आसरा न हो
तो दूसरा कोई सहारा नहीं होता।'' [1]

नशे के खिलाफ उन्होने जैसे एक मुहिम सी चलाई थी। नशे से स्वास्थ्य पर पढ़ने वाले हानिकारक प्रभाव से इन्होने लोगों को अवगत करवाया। वह घर–घर जाकर परचे बाँटते थे जिस पर नशे से होने वाली बिमारियों का साफ जिक्र होता, वह कहते थे। नशीली चीजों के सेवन से निम्नलिखित इनाम मिलते हैं :–

'' पहला इनाम – कैंसर
दूसरा इनाम – पिचके हुए गाल
तीसरा इनाम – गले हुए फेफड़े
चौथा इनाम – गंदे और काले दाँत।'' [2]

ऐसा सामाजिक कार्यकर्ता और जंगजू सिपाही हमेशा लोगों के दिलों की धड़कन बना रहेगा। सरकार द्वारा गांव बंदराल से घो ब्रह्मणा तक पाँच किलोमिटर सड़क का निर्माण इनके नाम पर किया गया है। यह सड़क शौर्य चक्र रजनीश मार्ग के नाम से विख्यात है।

संदर्भ

सूचना समग्री स्रोत :–
1. श्री रजनीश कुमार की डायरी से
2. श्री रजनीश कुमार की डायरी से
3. श्री रमेश चंद्र रजनीश के पिता जी
4. श्रीमती सुदेश कुमारी रजनीश की माता जी
5. श्री आशुतोश रजनीश के छोटे भाई
6. https://www.facebook.com>shaheed Rajneesh